



नई दिल्ली
अंक - 155

www.saikalpadhyatmsansta.com

श्री साई शक : 35-36
मार्च - 2017

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सद्गुरुनाथ दादाय नमः॥

आरती साधना

गुरुबंधुभगिनियों से

वंदनीय दादाजी ने अपने इस सद्दिध कार्य पद्धति में 'आरती' इस साधन में श्री पंतमहाराज जी का शब्द ब्रह्म और श्री गोरक्षनाथ जी के (नाथ परंपरा के) विमोचन एवं दीक्षाएँ आदि को अंतर्भूत कर 'आरती' को 'आरती साधना' में स्थित्यंतरित किया है।

हम ने दिसंबर 2016 के तत्वबोध में आरती साधना के प्रमुख अंगों का अध्ययन किया। हमने आरती साधना के तीन अंग देखे,

1. आरती के शब्द
2. आरती का संगीत – सुर, ताल, लय
3. गाने वाले की आर्तता – 'आर्त भाव'

हम ने यह भी देखा कि किसी भी शब्द के कम से कम पाँच अर्थ होते हैं। जैसे कि अव्यक्त अवस्था, शब्द, शब्दार्थ, मतितार्थ और गुढार्थ।

हमें आरती का अर्थ नहीं समझ आने के बावजूद भी उस आरती के स्पंद, उसका संगीत, शब्द ब्रह्म का अनुभव करके उस आरती साधना का अधिकतम लाभ होता है।

✽
Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

✽
Patron
Anand Bapshet

✽
Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

✽
Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

✽
Overseas
Yearly : US\$ 250.00
Life time : US\$ 500.00

✽
Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

✽
Published Every Month
©All rights reserved with
Publisher

आरती के अनेक अर्थ होते हैं और जिस प्रकार हमारा विकास होता जाएगा उस प्रकार हमें एक ही आरती के अलग अलग अर्थ (deeper meanings) समझ में आएंगे। अब हम कुछ आरतियों के शब्दार्थ और प्राथमिक (basic) पारमार्थिक अर्थों का अध्ययन करेंगे।

आरती – मूढ दास मी

“मूढ दास मी पउलों पायीं
तारीं तारीं आतां।।”

शाब्दिक अर्थ – मैं मूर्ख दास आपके चरणों में आया हूँ, मेरा उद्धार कीजिए।

हम भक्तों ने इस कार्य का लाभ हमारे परिवार की मुश्किलें सुलझाने के लिए लिया और मगर इस कार्य में इससे भी ज्यादा ताकत है, जिसका लाभ लेकर हम अपना उद्धार कर सकते हैं। ऐसा ज्ञान होने के बाद सर्वप्रथम हमें अपना अहंभाव बाजू में रखकर खुद को मूर्ख मानना चाहिए क्योंकि हमें यह जीवन क्यों प्राप्त हुआ, इस जीवन में हमें क्या प्राप्ति करनी है। जीवन का मायना क्या है, आदि के बारे में हमें बिल्कुल ज्ञान नहीं है। शायद आप व्यवहार में ज्ञानी होंगे लेकिन पारमार्थिक विशय में हम सभी अज्ञानी यानी मूर्ख हैं यह समझकर हमें गुरु के चरणों में शरण जाना है और उनका दास होना है। दास यानी नौकर या सेवक। जिस प्रकार किसी राजा के सेवक को सभी व्यवहार राजा की आज्ञाके अनुसार करने होते हैं उसी प्रकार श्री गुरु की शरण जाने के बाद हमें अपने सभी व्यवहार श्री गुरु मार्ग दर्शन के अनुसार एवं श्री गुरु ने दी हुई परमार्थ प्रश्नावली के अनुसार करने होते हैं। इस प्रकार का मूर्ख दास होकर हमें श्री गुरु के चरणों में शरण जाना है और उनको अपने उद्धार के लिए याचना करनी है।

“ असह्य दुःख संसाराचे तूचिं निवारीता

षड्रिपूनीं बहुत छाकियले तूचि माय त्राता।। ”

शाब्दिक अर्थ – संसार का असह्य (सहन न कर पाए ऐसा) दुख आप ही निवारण कर सकते हो।

षड्रिकार भी बहुत तकलीफ देते हैं, उसमें से प्यार से निकालकर, माँ की तरह धीरे-धीरे सिखाकर मेरा उद्धार करने वाले भी आप ही हो।

यहाँ ‘संसार का दुख’ इसके दो अर्थ हैं, एक हमारे कुटुंब, परिवार का दुख और दूसरा अर्थ यह पूरा जगत यानी संसार का। आज की परिस्थिति में सभी जगह अशांति है। हमारे देह के अंदर, परिवार में, समाज में, पूरे जगत में सबसे बड़ी समस्या है ‘असमाधान, अशांति’। जो गरीब है वह अशांत है और जो अमीर है, वह भी अशांत है। इस अशांति का प्रमुख कारण है हमारे बड़े हुए षड्रिकार। षड्रिकार यानी छ’ भाव—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर। वास्तविक रूप में इन

षड्विकारों की भी हमें जरूरत होती है। लेकिन इसका प्रमाण कम होना जरूरी है। जैसे ईश्वर प्राप्ति का भी लोभ होना जरूरी है। 'काम' के भाव से पूजा की, तो ही ईश्वर की तस्वीर सुंदर, मोहक दिखेगी। और इन षड्विकारों का एक महत्वपूर्ण कार्य होता है, वह हमारा विकास समझने के लिए। जिस प्रकार पढ़ाई करने वाले विद्यार्थी की पढ़ाई कितनी हुई इसकी परीक्षा हर साल होती है, उसी प्रकार जीवन जीते समय हम अपना कितना पारमार्थिक विकास प्राप्त कर पाए इसकी परीक्षा, हमारी रोजमरा की जिंदगी में हम षड्विकारों के आधीन कितनी बार जाते हैं, उससे होती है। षड्विकार देहिक शक्ति का अस्तित्व बताते हैं। जितनी देहिक शक्ति ज्यादा उतने षड्विकार ज्यादा। आज हममें, परिवार में और पूरे जगत में सबसे बड़ी समस्या यही है कि हम देहिक शक्ति प्रधान जीवन जी रहे हैं। अन्न की समस्या, पानी की समस्या या अशांति की समस्या देहिक शक्ति अधिक होने की वजह से है। हमारे देहिक माध्यम की रचना बदल गई है। पुराने जमाने में लोगों के पास भले ही पैसा कम हो लेकिन समाधान ज्यादा था, क्योंकि आत्मिक शक्ति ज्यादा थी। तब देहिक शक्ति सीमित थी। एक साधारण उदाहरण देखे तो लोग दिन में दो बार खाते थे, वह भी थोड़ा-थोड़ा और संतुष्ट रहते थे। फिर हफ्ते में उपवास भी करते थे। आज हमें डॉक्टर भी कहते हैं कि हर दो घंटे में थोड़ा-थोड़ा खाना चाहिए। क्योंकि हमारी देहिक शक्ति दिन व दिन बढ़ रही है और आत्मिक शक्ति कम हो रही है। इससे षड्विकार बढ़ रहे हैं, अज्ञान बढ़ रहा है और पूरा संसार दुखमय जीवन व्यतीत कर रहा है। इस बदलती हुई परिस्थिति को पूर्ववत लाने के लिए वं. दादा जी और प.पू. बाबा ने इस कार्य की स्थापना की। इसके अलावा अब जगत को तारने वाला कोई दूसरा आसरा नहीं है। यह बात आज दुनिया को गाँठ बाँध लेनी चाहिए। गुरु ने इस परिस्थिति का निराकरण उन्होंने सिद्ध करके हमें दिया है, अंकार साधना। इससे यह दुख निवारण होगा और आत्मिक शांति का समतोल बना रहेगा यह उनका वचन है। और बड़े ही प्रेम से वह हमारी माँ का रूप लेकर हमारे माध्यम से वह साधन कार्यान्वित कर रहे हैं।

“अनाथ बालक मी परदेशी प्रेमळ तूं माता

त्रिविधतापें त्रासलों आता मुक्त करीं भक्ता ।। ”

शाब्दिक अर्थ – मेरा उद्धार कीजिए यह विनती करते हुए भक्त आगे कहता है कि मैं अनाथ, बालक इस परदेस में आया हूँ और मेरे वाली, मुझे प्रेम देने वाली माता आप हो।

तीनों प्रकार के तापों से मैं त्रस्त (तकलीफ में) हूँ, आपके इस भक्त को इन तकलिफों से मुक्त कीजिए।

आत्मा का मूलभूत स्थान परलोक में रहता है लेकिन उसे परमात्मा तक जाने के लिए खुद

का उद्धार प्राप्त कर लेने के लिए देह धारण करके इस जगत में आना पड़ता है। इसलिए इस जगत में आया हुआ परदेसी है, अनाथ है और जीवन का ज्ञान पाने के लिए बालक स्वरूप है। गुरु माता ही उसे प्रेम देकर सिखलाई दे सकती है लेकिन जब हमने देह धारण किया तब काया, वाचा और मन इन तीन प्रमुख माध्यमों का विकास न होने के कारण त्रिविध तापों से मतलब इन तीनों की अलग अलग गति की वजह से जो तकलीफें आ रही है। उससे मैं परेशान होकर आपके चरणों में आया हूँ। मेरे जैसे सभी भक्त इसी अवस्था में हैं और हम सभी भक्तों को आप कृपावंत होकर, जीवन का ज्ञान देकर विमोचन कर इन तकलीफों से मुक्त कीजिए।

“अनन्य भावे शरण मी आलों माझी तुला चिंता

अखंड शांति मज देउनी पायीं ठेवीं दत्ता ।।”

शाब्दिक अर्थ – मैं अनन्य भावों से आपकी शरण आया हूँ अब मेरी चिंता आपकी चिंता हो गई है।

केवल आप मुझे अखंड शांति देकर अपने चरणों में रखें यही मेरी आपके चरणों में विनती है।

‘अनन्य भाव’ से शरण आना यानी इस जगत में श्री गुरु के सिवाय अन्य कोई भी नहीं है और अब अपना संपूर्ण जीवन श्री गुरु को और गुरुकार्य को समर्पित करना है यह भावना जागृत होना। जब इस प्रकार के अनन्य भाव से भक्त गुरु की शरण जाता है तब भक्त की चिंता सद्गुरु के चिंतन में, नामःस्मरण से दूर हो जाती है लेकिन श्री गुरु को चिंता लगी रहती है कि अब इस भक्त का उद्धार मैं किस तरह करूँ। तब भक्त की प्रार्थना एक ही रहती है कि मुझे आपकी कृपा से अखंड शांति प्राप्त हो और जन्म जन्म मुझे आपके चरणों में यानी आपके गुरुकार्य में स्थान प्राप्त हो।

॥ शुभं भवतु ॥

एक तुच्छ जन्म जन्म का सेवक,
श्री साईकल्प अध्यात्म संस्था